# Role of teacher in inclusive education
# (समावेशी शिक्षा में अध्यापक की भूमिका)

**Dr. Anita Jaiswal**
Assistant Professor, Department of Education
Sahu Ram Swaroop Women's College Bareilly
anitajaiswal516@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc1104

## Abstract:

*समावेशी शिक्षा केवल एक दृष्टिकोण ही नही बल्कि एक माध्यम भी है विशेषकर उन लोगों के लिए जिनमे कुछ सीखने की ललक होती है और जो तमाम अवरोधों के बावजूद आगे बढना चाहते है।यह इस बात को दर्शाता है कि सभी युवा चाहे वो सक्षम हो या विकलांग उन्हें सीखने योग्य बनाया जाय । इसके लिए एक समान स्कूल पूर्व व्यवस्थाएस्कूलों और सामुदायिक शिक्षा व्यवस्था तक सबकी पहुॅच सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है प्रशिक्षुओं की जरूरतों को पूरा करने लिए यह प्रक्रिया सिर्फ लचीली शिक्षा प्रणाली में ही सम्भव है । समावेशी शिक्षा एंसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें मूल्यों का ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों में प्रक्रियाओं और संरचनाओं के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों और प्रथाओं के माध्यम से सभी नागरिक अधिकारों को प्राप्त किया जाता है।*

*अध्यापन व्यवसाय ने प्राचीन काल से ही ख्याति एवं सम्मान प्राप्त किया है ।इस व्यवसाय की अपनी अलग शालीनता है प्राचीन काल में गुरू को एक उच्च आसन पर विराजमान किया जाता था तथा उसे बच्चे का आध्यात्मिक पिता कहा जाता था लेकिन वर्तमान युग में अध्यापक उतनी प्रशंसा का पात्र नही हैए जितना कि पहले था विवेकानन्द की विचारधारा में एक सच्चा अध्यापक वही है जो तत्काल ही विद्यार्थियों के स्तर तक आ जाए तथा अपनी आत्मा तक हस्तांतरित कर सके और विद्याथियों के कानों से सुन सकेंए आॅखों से देख सके तथा उनकी सूझ बूझ से ही समझ सकें । बालक के शिक्षण में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका है । उसे बालक की आवश्यकताओं तथा समस्याओं को समझाना होता है और उसी के अनुसार उनके अधिगम तथा क्रियाओं को निर्देशित करना पडता है ।*

*शिक्षा की मुख्य धारा से सम्बन्धित बालकों की यद्यपि विशिष्ट अधिगम सम्बन्धी आवश्यकताए होती हैए फिर भी वे सामान्य कक्षा शिक्षण के बहुत से कार्यो को करने की आवश्यक निपुणता रखते है । विशिष्ट विद्यार्थियों को भी विषय क्षेत्र में निपुणता एवं शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न बिषयों में कार्य करने की दक्षता के आधार पर शिक्षा की मुख्यधारा से सम्बद्ध किया जा सकता है । अब ऐसे बालकों को क्या पढाना है इसमें परिवर्तन की आवश्यकता नही है । यदि सामान्य शिक्षा का पाठयक्रम उन बालकों के लिए उपयुक्त है फिर भी अनुदेशनात्मक विधियों में परिवर्तन करना आवश्यक होता है । इनका प्रारूप पहले से निश्चित किये गये छात्रों की कार्यप्रणाली , कार्यक्षमता, निपुणता, दक्षता तथा वतावरण के अनुसार किया जाता है। अनुदेशन में पाठयक्रम चयन करना,प्रस्तुतीकरण,अभ्यास करना,दक्षता का विकास करना तथा क्रियान्वयन करना इन पाॅच बिन्दूओं को सुमेलित किया जाता है।*

**संकेत:** *व्यवसाय, समावेशी,* आवश्यकताऐं, सन्तुष्टि

स्कूल की परिधि में अध्यापक से बहुत सी आशायें की जाती है। उसका कार्य केवल कक्षा तक ही सीमित नही रहता बल्कि उसके कंधों पर स्कूल तथा समुदाय के मध्य उच्च स्तर के मधुर सम्बन्ध स्थापित करने जैसे जटिल कार्य भी होते है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसका सर्वप्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण कार्य अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाना है।शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए उसे अपने छात्रों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जैसे - उनकी आवश्यकताऐं रूचियाॅ मानसिक स्तर विशेष क्षमतायें कौशल अनुभव सामाजिक गुण एवं अन्य दूसरी बातें। इस प्रकार प्राप्त सूचनाओं के आधार पर वह अपने शैक्षिक कार्यक्रमों को ठीक प्रकार से व्यवस्थित एवं क्रियान्वित करके छात्रों की व्यक्तिगत क्षमताओं का उचित विकास कर सकेगा तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रभाव को कम कर सकेगा जिस प्रकार एक किसान अपनी फसल को उगाने में गर्व अनुभव करता है उद्योगपति अपने उत्पादन को बढाता है चित्रकार सुन्दर आकृतियों को बनाकर आनन्दित होता है वैज्ञानिक प्रयोगशाला की खोज में सन्तुष्टि पाता है ठीक उसी प्रकार अध्यापक मानव पदार्थो के साथ कार्य करने मे अपने आप पर गर्व महसूस करता है। उसके कार्य की महानता समुद्र की लहरों के समान गहन है। जिस प्रकार समुद्र की लहरों का अस्तित्व आसानी से नही मिटाया जा सकता उसी प्रकार छात्र पर अध्यापक के कार्यों एवं उसके व्यक्तित्व का प्रभाव जीवन के अन्तिम क्षणों तक बना रहता है।

आधुनिक भारत की स्वर्णिम कल्पनायें, आकाक्षायें एवं आशायें उसके शिक्षकों के स्तर पर निर्भर करती है इस सम्बन्ध में व्हाइट हैड ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में लिखा है-

TEACHER शब्द का विश्लेषण इस प्रकार

T- विश्वसनीय एवं धैर्यवान (Truthful and Tolerant)

E- कुशल (Efficient)

A- मिलनसार ( ।िमबजपवदंस)

C- प्रसन्नचित तथा विषय पर अधिकार (Cheerful and Command over subject)

H- स्वास्थ्य शारीरिक मानसिक (Health-physical, mental)

E- कार्य करने की शक्ति एवं लगन (Energetic and Eager)

R- साधन सम्पन्नता एवं नियमित कार्य प्रणाली (Resourceful and Regular)

शिक्षा की मुख्य धारा से सम्बन्धित बालकों की यद्यपि विशिष्ट अधिगम सम्बन्धी आवश्यकतऐं होती है फिर भी वे सामान्य कक्षा शिक्षण के बहुत से कार्यों को करने की आवश्यक निपुणता रखते है। विशिष्ट विद्यार्थियों को भी विषय क्षेत्र में निपुणता एवं शिक्षा से सम्बन्धित विषयों में कार्य करने की दक्षता के आधार पर शिक्ष की मुख्य धारा से सम्बद्व किया जा सकता है। अब ऐसे बालकों को 'क्या' पढाना है इसमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है।यदि सामान्य शिक्षा का पाठयक्रम उन बालकों के लिए उपयुक्त है फिर भी अनुदेशात्मक है।विधियों में परिवर्तन करना आवश्यक होता है इस प्रकार से बनाये गये अनुदेशनों का संगठन ध्यानपूर्वक किया जाता है इनका प्रारूप् पहले से निश्चित किये गये छात्रों की कार्य प्रणाली ,कार्यक्षमता निपुणता दक्षता तथा वातावरण के अनुसार किया जाता है। अनुदेशनों को प्रभावीशाली बनाने के लिये निम्न बिन्दुओं से ध्यान रखना आवश्यक है।-

- ✓ उपयुक्त अधिगम कार्यो को चुनना।
- ✓ अधिगम कार्यों को छोटे छोटे खण्डों (पदों)में बाॅटना।
- ✓ अनुदेशनात्मक विधियों का क्रमबद्व प्रयोग।
- ✓ किसी कार्य की यथार्थता समझना।
- ✓ बालक को कार्य में व्यक्त रहने का अधिकतम समय निश्चित करना।
- ✓ बालक को कार्य के प्रति स्पष्ट निर्देश दिये।
- ✓ सामान्यीकरण एवं व्यवस्था का निरीक्षण करना।

विद्वानो का मत है कि बच्चे खली घडे के समान होते है जिन्हें भरना है ।कुछ का विचार है कि बच्चों का मन कोरी स्लेट की तरह होता है जिस पर अनुभव और ज्ञान को लिखना है। आज शिक्षा की मुख्य भूमिका समाज की गतिहीनता को जीवन्त बनाने, विकास और परिवर्तन करने ,समाज निर्माण ब मानव संसाधनो के विकास के लिए अत्यावश्यक अनुभव की जा रही है । साथ ही भावी नागरिकों को उनकी शक्ति का बोध कराना उन्हें उनके कत्र्तव्यों की जानकारी देना व उनके दृष्टिकोण को वैज्ञानिक भी बनाना है।

अध्यापक को बाधित बालको की प्रत्सेक विषय में अधिगम सम्बन्धी समस्याओं की पहचान चाहिये तथा रोकथाम हेतु उचित अभ्यास करने के प्रस्ताव देने चाहिये समाज का विकास उसमें निहित सम्पूर्ण मानवीय क्षमता का कुशलतापूर्वक उपभोग पर निर्भर करता है।समाज में सभी वर्गो के सहयोग के बिनापूर्ण विकास सम्भव नहीे हो सकता है। शिक्षा किसी समाज के चहुॅमुखी विकास में सबसे महत्वपुर्ण कारक है। शिक्षा को व्यक्ति की दक्षता बढाने का साधन ही नही माना जाता है बल्कि लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी निभाने और अपने सामाजिक जीवन स्तर में सुधार के लिए भी शिक्षा आवश्यक है। भारत में शारीरिक रूप से चुनौती झेल रहे लोगों की संख्या अधिक है और इनके विकास के बिना देश का पूर्ण विकास संभव नही है।

समावेशी शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है। शिक्षा का समावेशीकरण यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूतिै के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्यांग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। भारत में समावेशी विकास की अवधारणा काई नई नहीं है। प्राचीन धर्म ग्रन्थों का यदि अवलोकन करें तो उनमें भी सभी लोगों को साथ लेकर चलने का ही भाव निहित है।लेक्नि नब्बे के दशक से उदारीकरण की प्रक्रिया

होने से यह शब्द नए रूप में प्रचलन में आया ्क्योंकि उदारीकरण के दौर में वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी आपस में निकट से जुडने का मौका मिला और अब यह अबधारणा देश और प्रान्त से बाहर निकलकर वैश्विक सन्दर्भ में भी प्रासांगिक बन गई है। सरकार द्वारा घोषित कल्याणकारी योजनाओं में इस समावेशी विकास पर विशेष बल दिया गया और 12वीं पंचबर्षीय योजना 2012.17 का तो सारा जोर एक प्रकार से त्वरित समावेशी और सतत विकास के लक्ष्य हासिल करने पर है ताहक 8 फीसद की विकास दर हासिल की जा सके।

समावेशी शिक्षा में दिव्यांग (शारीरिक दृष्टिबाधित श्रवणहास)सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर विभिन्न परिवेश से आये हुए विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य किया जाता है । जिसमें शिक्षक को विशेष कला एवं दक्षता से युक्त होना पडता है साथ ही कक्षा में शिक्षक को इन विद्यार्थियों को शिक्षण कार्य कराते समय विभिन्न प्रकार की विशेष सामग्रियों एवं साधनों की आवश्यकता पडती है।कक्षा में शिक्षक को शिक्षण में सहकारी शिक्षण ,परियोजना शिक्षण ,सहयोगात्मक शिक्षण विधि आदि का उपयोग विद्यार्थियों की विभिन्नता के अनुकूल किया जाय।समावेशी शिक्षा की कक्षा में शिक्षकों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पडता है।समावेशी शिक्षा में विद्यार्थियों के समावेशी विकास में शिक्षक की भूमिका भाषा बाधित बालक के लिये द्वै भाषिक अध्यापक की आवश्यकता होती है बालक को सर्वप्रथम उसकी मूल भाषा में सम्बोध सिखाया जाता है। तत्पश्चात उसे नई भाषा में उसी सम्बोध को पढाया जाता है। अतः अध्यापक को बालक की मातृभाषा और जिस माध्यम से बालक को पढाया जा रहा है उस भाषा का ज्ञान होना चाहिए।

समावेशी शिक्षा में कक्षा शिक्षण कार्य जटिल प्रक्रिया है क्योंकि समावेशी शिक्षा की कक्षा में विभिन्न अक्षमता युक्त(शारीरिक दृष्टिबाधित श्रवणहास दिव्यांग) एवं सामाजिक आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के क्षेत्र से होते ह। जिनकी कुछ विशेष आवश्यकतायें होती है। समावेशी विद्यालयों की कक्षाओं में शिक्षक को विद्यार्थियों के अनुकूल शिक्षण विधि (सहकारी शिक्षण एवं परियोजना आधारित शिक्षण) का उपयोग किया जाना चाहिए जिसमें सभी विद्याार्थियों का सीखना संभव हो जाये अतः यहां पर इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि मामूली अक्षमताओं से ग्रस्त जिन बच्चों को मुख्य धारा के बाहर रखा जाता है उनकी जरूरतों को पूरा करने के साथ साथ समावेशी शिक्षण पद्वति नियमित कक्षाओं में पहले से मौजूद ऐसे सैकडों विद्यार्थियों को लाभ पहुॅचाती है जो मामूली से लेकर मध्यम दर्जे की सीखने की कठिनाईयों को ज्यादयतर ना तो पहचाना जाता है।और न ही उनका समाधान किया जाता है।

इस प्रकार समावेशी शिक्षा में कक्षा शिक्षण हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जाते है-

- ✓ कक्षा का वातावरण भेदभाव रहित सभी सीखने वाले के अनुकूल होना चाहिए जैसा एन,सी,एफ,2005 में बतलाया गया है कि सार्वजनिक स्थल के रूप में बतलाया गया है कि सार्वजनिक स्थल के रूप में समानता, सामाजिक विविधता और बहुलता के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए साथ ही बच्चों के अधिकारों और उनकी गरिमा के प्रति सजगता का भाव होना चाहिए इन मूल्यों को सजगतापूर्वक स्कूल के दृष्टिकोण का हिस्सा बनाया  जाना चाहिए और उन्हें स्कूली व्यवहार की नींव बनाना चाहिए
- ✓ सामान्य शिक्षक की कक्षा में भी श्रवण बाधित बालक प्रवेश ले लेते है। इसीलिए शिक्षक का यह उत्तरदायित्व होता है कि शिक्षक ऐसे बालकों पर ध्यान दें और उन्हें समुचित सहायता प्रदान करें इस सन्दर्भ में उन्हे निम्न भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है।
- ✓ ऐसे बालकों के व्यवहार के आधार पर उनकी पहचान करें और सामान्य कक्षा में उन्हें आगे की सीटों पर बैठाने की व्यवस्था करें।
- ✓ शिक्षक को इन बालकों के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
- ✓ शब्दों के उच्चारण में सामूहिक उच्चारण प्रविधि की सहायता लेनी चाहिए।

निष्कर्षता हम कहेंगे कि समावेशी शिक्षा में कक्षा शिक्षण कार्य छात्रों के अनुरूप एवं उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया जाए शिक्षण इस प्रकार से हो कि जो विद्यार्थियों को उनके घरेलु ज्ञान से जोडकर दिया जाए साथ ही समावेशी कक्षा में विभिन्न वर्ग समूह के विद्यार्थी आते हैं जिससे कक्षा में विभिन्नता में भी एकता के सिद्वान्त का पालन किया जाता है समावेश का अर्थ सभी छात्रों को एक ही स्तर पर आंके जाने का नही है कि जिन्हें पहले से तय सूचनाएं दी जाय। ज्ञान हासिल करना सक्रियता है निष्क्रियता नही। सिखाने की प्रक्रिया शिक्षक केन्द्रित से छात्र केन्द्रित की तरफ बढनी चाहिए छात्रों को सक्रिय अन्वेषक की तरह विकसित होना चाहिए इसके लिए प्रेरक विचारों को बढावा देने की रणनीति बहुत फायदेमंद शिक्षण विधि सावित हो सकती है। इस रणनीति का प्रयोग करने के लिए शिक्षक को खोजी शिक्षण के जरिए सभी  छात्रों को उचित अनुभव नियमों के विश्लेषण और सिद्वान्त मुहैया कराने की जरूरत है। शिक्षक कक्षा में सभी छात्रों को अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्रदान कराए और सरल भाषा और अभिव्यक्ति का प्रयोग करे जो सभी छात्रों के लिए महत्व रखे।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- शर्मा, पंकज समावेशी विद्यालय, खोजे और जाने, उदयपुर विद्या भवन सोसाइटी, अंक 8 पृष्ठ संख्या: 16

2- शर्मा आर0 ए0 (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर० लाल० बुक डिपो मेरठ

3- भटनागर अनुराग (2008) समावेशी शिक्षा आर लाल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ संख्या 2/3

4- सिंह अजय कुमार (2008) विकलांग बच्चों की शिक्षा योजना पत्रिका नई दिल्ली प्रकाशन विभाग भारत सरकार अंक प्रष्ठ संख्याः 21 से 23

5- राव एस श्री निवास (2016) वंचितो के लिए शिक्षा चिंताएॅ चुनौतियाॅ एवं भावी योजना,एॅ,

योजन पत्रिका नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, भारत सरकार अंक: 1 प्रष्ठ संख्या 58 से 60

6- ठाकुर यतीन्द्र (2016) समावेशी शिक्षा आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन प्रथम संस्करण प्रष्ठ संख्या 297-308, 317- 344

IJOMRC